भूमिका:

जब विकास की बात होती है तब आम-तौर पर ऊँची इमारतें और चमचमाती सडकों की छाया मन में स्वतः आ जाती है। लेकिन सही मायने में विकास का आधार शिक्षा और स्वास्थ्य होना चाहिए। आज स्वतंत्रता के इतने दशकों बाद भी हमारी चिकित्सा व्यवस्था का हाल संतोष जनक नहीं है। प्राइवेट अस्पताल की लूट से व्यक्ति का सामना प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से होता ही है। ऐसे में मीडिया की जिम्मेदारी होनी चाहिये की ऐसे आधारभूत विषयों पर गम्भारिता से कार्य करे।

भारत की बड़ी आबादी गाँव और जंगलों में रहती है। ऐसे कई इलाके हैं, जहाँ आज भी बिजली, सडकें नहीं पहुँच पाई है। स्वास्थ्य सुविधा की पहुँच कैसे हो। जंगल और गाँव के लोगों में आधुनिक तौर-तरीके का अतिक्रमण उन्हें उनके प्राक्रतिक संसाधनों से दूर करता है। जिससे उनकी शारीरिक क्षमता में कमी आती है। कुल मिलकर वे बीमार होते है। दूसरी मार उन्हें तब लगती है जब सरकारें उनके परंपरागत चिकित्सा तरीकों को नष्ट करती है। और उन्हें आधुनिक चिकित्सा मुहैया कराने में असफल होती हैं। आधुनिक स्वास्थ्य सेवा की क्रय शक्ति न होना और परंपरागत उपचार के संसाधनों का नष्ट होना उनके लिए दोहरी मार है। ऐसे में यह प्रश्न आता है कि क्या मीडिया का दायित्व ऐसे मामलों को सरकार तक लाना नहीं है?

शोध के माध्यम से मेरा प्रयास होगा कि वैकल्पिक मीडिया उपकरणों की सहभागिता का अध्यन कर स्वर community radio की कार्य पद्धति और संचार व्यवस्ता को समझा जा सके। साथ ही स्वास्थ्य आधारित कार्यक्रमों के जनता पर प्रभाव का आंकलन किया जा सके।

एक पत्रकारिता शोधार्थी के नाते मेरे शोध का आधार विषय वैकल्पिक मीडिया है। शोध से संबंधित तथ्यों को समझाने के लिए वैकल्पिक मीडिया की समझ होना अनिवार्य हो जाता है। अतः दुसरे अध्याय में वैकल्पिक मीडिया के इतिहास पर संक्षिप्त चर्चा करते हुए वैकल्पिक मीडिया की परिभाषा, आयाम, वैश्विक पृष्ठभूमि एवं भारतीय परिपेक्ष्य में वैकल्पिक मीडिया को विश्लेषित किया गया है।

वैकल्पिक पत्रकारिता या मीडिया वह है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी रूप से कारोबारी पत्रकारिता का हिस्सा नहीं है। या यूँ कहें कि ऐसा संचार माध्यम जो जन चेतना या जनता के मुद्दों पर काम करता हो और उसका उद्देश्य केवल धन अर्जन ना हो ऐसी पत्रकारिता वैकल्पिक पत्रकारिता है।

सूचना मानव के लिए हमेशा से जरूरी रही है। मानव की ललक उसे लगातार नए से नया खोजने के लिए प्रेरित करती है। उसी के परिणाम स्वरुप भारत में और साथ ही विश्व भर में पत्रकारिता की कई विधाएं हैं। जो पत्रकारिता एक निर्धारित

पैमाने पर काम कर रही है। जिसे सरकार या कारोबारी चला रहे होते हैं। यह पत्रकारिता की वह शक्ल है जिसे हम मुख्यधारा की पत्रकारिता कहते हैं।

भारत जैसे देश के लिए आज जो मुख्य विषय है, उन पर मुख्यधारा की मीडिया का रूझान उस तरह का नहीं है। आज जो मुख्य मुद्दें हैं, उन्हें छोटे अखबार या अन्य वैकल्पिक माने जाने वाले माध्यम ही जनता के सामने ला रहा है।

आज पूरा ग्रामीण समाज स्वास्थ्य के लिए नवीन चिकित्सा पद्धति पर आश्रित है। उनके अपने तरीके अब ख़त्म होने की कगार पर है। असल समस्या उनके बदलते तरीके ही नहीं हैं समस्या यह है जो चिकित्सा पद्धति का बाज़ार है उसमें ज्यादातर ग्रामीण तमाशबीन हैं, उनके पास इतनी महँगी व्यवस्था का लाभ लेने योग्य क्रय शक्ति नहीं है।

ऐसे गंभीर विषय पर एक लोकतंत्र की मुख्यधारा पत्रकारिता खामोश ही दिखती है। कुछ NGO ग्रामीण स्वास्थ्य की समस्याओं पर कार्य कर रहे हैं। सेवाग्राम स्थित कस्तूरबा गाँधी चिकित्सालय के पाठ्यक्रम में छात्रों को गाँव में भेजा जाता है ग्रामीण जनता के साथ मिलकर छात्र सहभागी स्वास्थ्य जागरूकता अभियान कर रहे हैं। लेकिन इन संगठनों का क्षेत्र सीमित है शायद जरुरत का केवल एक प्रतिशत। चिकित्सालयों की जगह अब पांच सितारा हॉस्पिटल ने ले ली है जहाँ साधारण आदमी के लिए एक दिन का बेड चार्ज वहन कर पाना बहुत कठिन है।

शोध के तृतीय अध्याय में स्वास्थ्य समस्यओं की पृष्ठभूमि को कुछ सरकारी एवं गैर सरकारी आकड़ों, रिपोर्ट्स के आधार पर समझाया गया है। ग्रामीण जनता एवं उनकी समस्याओं के प्रति मीडिया की अपनी जिम्मेदारी है। कुछ उदाहरणों द्वारा मीडिया का वर्तमान स्थिति का हाल विचारणीय है। पुराने चिकित्सा के तौर तरीके और उनकी संचार पद्धतियां विलुप्त हो रही है। शोध के तीसरे अध्याय में ही ग्रामीण स्वास्थ्य की परम्परा एवं उसकी संचार की व्याख्या की गई। ग्रामीण स्वास्थ्य समस्यायों के निराकरण के लिए सरकार की कई लाभप्रद योजनाएं है। जिनका जिक्र शोध के तीसरे अध्याय में ही किया गया है। केंद्र सरकार के अलावा छत्तीसगढ़ सरकार की ग्रामीण स्वास्थ्य योजनाओं और नाकारा प्रचार तंत्र में ढील और नाकारा प्रचार तंत्र के कारण योजनाओं का क्रियान्वयन, जमीन पर लगभग शून्य है स्वास्थ्य योजनाओं के प्रचार प्रसार को सरकार कि नीतियों का जनता पर प्रभाव जानने का भी प्रयास किया गया है। भारत 6 लाख गाँव का देश है। जहाँ ग्रामीण समस्याओं के सवाल सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन ग्रामीण समस्याओं में ग्रामीण स्वास्थ्य समस्या बड़ी समस्याओं में शामिल है। मीडिया ग्रामीण समस्याओं के कितने मुद्दों को जगह दे रही है तथा स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर मीडिया बहुत ज्यादा उदासीन है। इन सभी मुद्दों को मीडिया पर स्थान मिलना चाहिए। यह मीडिया कि नैतिक तथा पेशेवर जिम्मेदारी है।

ग्रामीण जनता के बीच वैकल्पिक पत्रकारिता की उपस्थिति, कार्यपद्धति एवं प्रभाव को जाँचने के लिए सीजीनेट स्वर गैर सरकारी संगठन की केस स्टडी की गई है। शोध के चौथे अध्याय में बताया गया है कि सीजीनेट स्वर किन उद्देश्यों के साथ

शुरू हुई? तकनीकि दृष्टि से क्या बदलाव हुए? उनके कार्यप्रणाली का संक्षिप्त आंकलन तथा सीजीनेट स्वर के संरचनात्मक ढाँचें को रेखांकित किया गया है।

सीजीनेट स्वर एक गैर-सरकारी संगठन है, जिसका उद्देश्य मीडिया को लोकतान्त्रिक बनाना है। यह एक एक 'Voice based web portal' की तरह कार्य करता है। सीजीनेट स्वर ने 2004 में कार्य करना शुरू किया। इसका उद्देश्य, इसके नाम के अनुसार है। सी।जी। (CG) का पूरा नाम सेंट्रल गोंडवाना (Central Gondwana) और नेट (Net) का तात्पर्य वेब (Web) से है। अर्थात छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र सहित पूरा गोंडवाना क्षेत्र जिसे सेंट्रल गोंडवाना लैंड के नाम से जाना जाता है। यहाँ की ग्रामीण जनता की खबरों को वेब के माध्यम से दुनिया को बताना, साथ ही वेब रिपोर्टिंग के माध्यम से समस्याओं के निराकरण के प्रयास सीजीनेट स्वर द्वारा 2004 से ही जारी है। 2004 में छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले से सीजीनेट स्वर ने रिपोर्टिंग का काम शुरू किया। जशपुर जिले के कुनकुरी ब्लॉक की घटनाओं को वेब के माध्यम से दुनिया के बीच प्रसारित किया। एक वेबसाइट के रूप में 6 साल पूरा हो जाने के बाद सीजीनेट स्वर दल ने जनता की भागीदारी स्थापित करने के लिए 'Voice based system' तैयार किया। जहाँ सीधे जनता की आवाज रिकॉर्ड कर voice एवं text दोनों प्रारूपों में इंटरनेट पर उपलब्ध कराया गया। इसका कारण यह है कि ज्यादातर ग्रामीण जनता इंटरनेट एवं नविन उपकरणों से दूर हैं, जबकि आज भारत के पिछड़े इलाकों में से एक अभुझमाड़ क्षेत्र में भी टेलीफ़ोन सर्विस दाखिल हो चुकी है। 'voice based syatem' दरअसल मोबाइल कॉल आधारित है, जहाँ एक टोल फ्री नंबर पर मिस्ड कॉल करने से प्रतिउत्तर में सीजीनेट सवार दल द्वारा कॉलकर्ता को कॉल किया जाता है। यह कल कंप्यूटर आधारित होता है, जिसमें जनता को अपने रिकॉर्ड सन्देश को सुनने का विकल्प मिलता है। कॉल के दौरान 3 मिनट की अवधि तक का सन्देश रिकॉर्ड किया जा सकता है। रिकार्डेड सन्देश सीजीनेट स्वर के तकनीकि दल तक पहुँचता है। तकनीकि दल प्राप्त voice मेसेज को सम्पादित कर उसकी आवाज संबंधित दिक्कतों को दूर करता है और प्राप्त सन्देश को Transcription कर टेक्स्ट और ऑडियो दोनों प्रारूपों में इंटरनेट पर उपलब्ध कराता है।

सीजीनेट स्वर मुख्यतः तीन भागों में कार्य करता है:

- **CG Net Swara**
- **Health Swara**
- **Aadivasi Swara**

सीजीनेट स्वर के अंतर्गत सेंट्रल गोंडवाना की की तमाम खबरें, समस्याएँ, लोक संस्कृति एवं लोक गीत आदि को शामिल किया जाता है।

स्वास्थ्य स्वर में ग्रामीण लोगों को दवाईयों की जानकारी, आदिवासियों द्वारा उपयोग किये जाने वाले जंगली दवाईयों, जड़ी-बूटियों की जानकारी के साथ-साथ इनके उपयोग के तरीकों को भी बताया जाता है। ग्रामीण स्वास्थ्य समस्याओं की रिपोर्टिंग की जाती है तथा स्वास्थ्य जागरूकता संबंधित प्रयास किए जाते हैं।

आदिवासी स्वर में आदिवासियों की जीवनशैली, लोक संस्कृति, लोक कलाएँ, शादी, पहनावे, जंगली दवाओं के तौर-तरीके, उनके गीत जैसे सभी पहलुओं पर बात की जाती है। इन सभी विषयों को ध्यान में रखकर 15 मिनट का एक कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। कार्यक्रम निर्माण में एक गीत, आदिवासी समस्याओं की जानकारी और निवारण जैसे तथ्यों का प्रयोग किया जाता है। चूँकि यह ब्लूटूथ पर आधारित होता है इसलिए इसे ब्लूटूथ रेडियो भी कहा जाता है।

इन सबके बावजूद, सीजीनेट स्वर द्वारा 2013 में यात्रा शुरू किया गया। यात्रा के लिए एक टीम का चयन किया जाता है। जिसमें नाटक-मंडली, संगीत-मंडली को शामिल किया जाता है। यह टीम ग्रामीण जनता के बीच जाती है तथा कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें जागरूक करने का काम करती है। कार्यक्रम की शुरुआत में यात्रा टीम द्वारा लोगों की लोकगीत को गया जाता है। इसका प्रभाव यह होता है कि वहाँ के लोग कार्यक्रम की और खींचे चले आते हैं। भीड़ इक्कठा होने के बाद, यात्रा टीम द्वारा नाटक के माध्यम से लोगों की समस्याओं, स्थितियों आदि से रूबरू कराया जाता है। इसका सीधा असर लोगों पर पड़ता है और अपनी समस्याओं को जानने के बाद उनकी जिज्ञासा होती है कि इन समस्याओं के निराकरण के लिए सरकार की और से क्या किया जा रहा है। नाटक द्वारा लोगों की जिज्ञासा को शांत करने का भी काम किया जाता है। इसके माध्यम से यह बताया जाता है कि सरकार द्वारा कौन-कौन सी योजनाओं को बनाया गया है और उसका क्या लाभ है। साथ ही यह भी बताने की कोशिश किया जाता है कि योजनाएं क्यों सफल नहीं हो पाती है? सीजीनेट स्वर खुद को लोगों के सामने एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता है और कठपुतली नाटक के द्वारा उनको यह बताने की कोशिश करता है कि कैसे आप अपनी समस्याओं को सरकारी महकमे तक पहुंचा सकते हैं।

यात्रा टीम गाँव के युवा लोगों को अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए आमंत्रित करती है। लोगों को प्रशिक्षण दल द्वारा 3 दिनों की तकनीकि ट्रेनिंग भी दी जाती है, जिसमें यह बताया जाता है कि कैसे वह मोबाइल, इंटरनेट, कंप्यूटर आदि का उपयोग कर सीजीनेट स्वर तक अपनी समस्याओं को पहुँचा सकते हैं। 2013 में इस यात्रा की शुरुआत हुई और यात्रा टीम ने अपनी पहली यात्रा मंडला, बालाघाट और छिंदवाडा में दो टीमों ने दो भाषाओं में कार्यक्रम किया। इनमें हिंदी और गोंडी भाषा शामिल थी। हिंदी भाषा की टीम हिंदी में तथा गोंडी भाषा की टीम गोंडी में कार्यक्रम करते थे।

शोध की विषयवस्तु की समझ के लिए प्राथमिक डेटा संकलन सीजीनेट स्वर के कार्यक्षेत्र में किया गया है।

शोध के उद्देश्यों के अनुसार ही अनुसूची तैयार की गई है। जिसके अंतर्गत वैकल्पिक मीडिया के प्रकारात्मक पक्ष के अध्ययन के अलावा ग्रामीण स्वास्थ्य की संचार प्रणाली एवं यथा-स्थिति, मुख्यधारा की पत्रकारिता की भूमिका एवं सीजीनेट स्वर के प्रभाव का अनुमान लगाने का प्रयास किया गया है।

अनुसूची के प्रश्न चार भागों में हैं:

- **सामान्य जानकारी**
- **स्वास्थ्य सेवाएं एवं संचार**
- **ग्रामीण स्वास्थ्य एवं संचार**
- **सीजीनेट स्वरा की संचार पद्धति एवं प्रभाव**

सी।जी।नेट स्वरा के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत पांच गाँव के लोगों से बात कर अनुसूची साक्षात्कार पूरा किया गया। प्रत्येक गाँव के दस लोगों से बात की गई है।

चुने गए पांच गाँव में से दो गाँव के लोगों से बातचीत सीजीनेट की यात्रा टीम के कार्यों का प्रभाव एवं सी। जी। नेट की संचार प्रणाली का असर जानने के लिए तीन गाँव ऐसे लिए गए, जहाँ सीजीनेट स्वरा टीम के साथ नहीं जाकर, उसके बाद लोगों से बात की और स्थिति का जायजा लिया गया।